परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

परमपिता परमात्मा द्वारा

विश्व के सभी आत्माओं प्रति दिव्य संदेश

कलियुगी कौड़ी जैसे पतित मनुष्य से सतयुगी हीरे जैसा पावन बनने का तथा एक सेकंड में स्वर्ग का राज्यअधिकार प्राप्त करने का निमन्त्रण

'शिव' परमात्म्याचे (ॐकार, अल्लाह, GOD, जेहोवा) दिव्य अवतरण 'प्रजापिता ब्रह्मा' यांच्या शरीरात झाले आहे. २१व्या शतकात सुवर्ण भारताची निर्मिती करण्यासाठी 'शिव परमात्मा' हाच संदेश देत आहे ☆ प्रिय वत्सांनो, स्वतःला आत्मा समजून माझी आठवण करा म्हणजे तुमच्या विकर्मांचा विनाश होईल व तुम्ही पावन बनून पावन सृष्टीचे अधिकारी बनाल

- मीठे बच्चे अपने को आत्मा समझ, मुझ बाप को याद करो, तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम पावन (Holy) बन पावन दुनिया (स्वर्ग) के मालिक बनेंगे

RENOUNCE ALL BODILY RELIGION, REMEMBER THAT YOU ARE SOULS, REMEMBER YOUR ORIGINAL HOME (SOUL WORLD - MUKTIDHAM) & HAVE COMMUNION WITH ME, ONLY BY REMEMBERING ME YOUR SINS WILL BE DESTROYED AND YOUR SOUL CAN BE PURIFIED.

- सर्व आत्माओं का परमपिता एक है और निराकार है। वह ज्योतिबिंदु स्वरूप है। उनका नाम सदाशिव है। वे सर्वव्यापक नहीं बल्कि ब्रह्मलोक के वासी हैं। उनको शिवलिंग अथवा ज्योतिर्लिंग के रूप में पुजते हैं तथा जन्मदिन शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। परमात्मा शिव ही ज्ञान के सागर, पतितपावन गीताज्ञानदाता, मुक्ति-जीवनमुक्तिदाता हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के भी पिता तथा रचयिता होने कारण उन्हें त्रिमूर्ती कहते हैं। वे जन्म मरण रहित हैं। उनका अवतरण कलियुग के अंत और सतयुग के आरंभ का संगम अर्थात् संगमयुग पर होता है। वे साधारण वृद्ध मनुष्य (ब्रह्मा) के तन में प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना करवाते हैं तथा शंकर द्वारा पुरानी कलियुगी दुनिया का विनाश करवाते हैं।

- हम सब आत्मायें भी उसी एक परमात्मा की संतान, निराकार ज्योति बिंदुस्वरूप हैं। आत्मा भृकुटि (Between Eyebrows) में रहती है तथा आपस में भाई-भाई का संबंध है। आत्मा अधिकतम 84 जन्म लेती है। अब सभी आत्मायें जन्म लेते पतित (Degraded) हो गई है तथा अपने वास्तविक घर मुक्तिधाम-SOULWORLD -सूर्य चंद्र तारों के पार, सुनहरे लाल प्रकाश वाली दुनिया को भूल गई है जहां से वह इस मनुष्यसृष्टि पर समयानुसार पार्ट (Part) बजाने आती है व विनाश के पश्चात् शिवपिता के साथ पुनः चली जाती है। आत्मा परमात्मा नहीं हो सकती क्योंकि परमात्मा एक ही है और सदासत्य (EverTruth) सदा पवित्र (Everpure) तथा जन्ममरण रहित हैं।

- गीता ही सर्वशास्त्र शिरोमणि है, जो परमात्मा शिव द्वारा कलियुग अंत व सतयुग आदि (संगमयुग) पर दिया जाता है जिसकी श्रीमत को धारण कर नई पावन दुनिया (सतयुग अथवा स्वर्ग) में श्रीकृष्ण का जन्म होता है। वस्तुतः शिव परमात्मा श्रीकृष्ण के भी पारलौकिक पिता हैं।

(●) सद्गतिदाता कोई मनुष्य हो नहीं सकता। अनेक जन्म गंगा स्नान करने पर भी, अनेक तरह से मंत्र, व्रताचरण, शास्त्र इत्यादि पठन, दानादि करने पर भी, इसी तरह सैकड़ों जन्म लेने पर भी ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती है। दुःखसागर बने हुए इस विश्व में पापात्माएँ, पुण्यात्माएँ महात्माएँ, धर्मात्माएँ, देवात्माएँ आदि सभी परमात्मा की आराधना करते हैं और वे जन्म-मरण चक्र में आते हैं। उन्हें परमात्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं है। इनमें से कोई भी परमात्मा नहीं हैं। आत्माएँ अनेक हैं व माता के गर्भ द्वारा जन्म-मरण के चक्र में आती है। इसलिए पावन से पतित भी बनती है। परमात्मा एक है व जन्म-मरण रहित है, सदा सत्य, सदा पवित्र हैं। आत्माएँ रचना व परमात्मा रचयिता है। इसलिए सभी पतित आत्माओं को पावन बनाने, दुःखों से मुक्त (Liberate) करने तथा सभी आत्माओं को घर- मुक्तिधाम का रास्ता बताने परमात्मा को अंतिम समय परमधाम- मुक्तिधाम से साकार मनुष्यलोक में अवतरित होना ही पड़ता है। तथा पुरानी, विकारी, अपवित्र दुनिया को नई, निर्विकारी, पावन दुनिया बनाने का अर्थात् कलियुग दुःखधाम (नरक) को बदले सतयुग सुखधाम (स्वर्ग) की स्थापना का अलौकिक कर्तव्य करना पड़ता है।

(●) यह सृष्टिरूपी अनादि नाटक हर कल्प (5000 वर्षों) के बाद हुबहू पुनरावृत्त (Repeat) होता ही रहता है। यह चार युग (EPOCHS) सतयुग (स्वर्णयुग - GoldenAge), त्रेतायुग (रजतयुग - SilverAge) द्वापरयुग (ताम्रयुग - CopperAge), कलियुग (लोहयुग - IronAge) में विभक्त (बँटा) है। प्रत्येक युग 1250 वर्षों का होता है। सतयुग, त्रेतायुग को स्वर्ग (Heaven) और द्वापर कलियुग को नरक (Hell) कहते हैं। स्वर्ग में पूज्य, सर्वगुण संपन्न, संपूर्ण निर्विकारी, पावन देवी देवतायें रहते हैं तदानुसार प्रकृति भी सतोप्रधान सुखदायी होती है। उसे शिवालय या श्रेष्ठाचारी दुनिया कहते हैं। वहाँ भक्ति, शास्त्र, रोग, अपमृत्यु, 5 विकार होते नहीं इसलिए ब्रह्मा का दिन कहा है इसके विपरीत नरक (द्वापर कलियुग) में अवगुणी, विकारी, रोगी, दुःखी, मनुष्य (पूजारी) रहते हैं तथा प्रकृति भी रजो-तमोप्रधान दुखदायी होती है। इन दोनों युगों में संसार की दुःख दूर करने धर्मात्माओं, महात्माओं, साधु संतों का आगमन होता है। शास्त्र, पुराण, धर्मशास्त्र मंदिर इत्यादि बनना शुरू होते हैं। यही भ्रष्टाचारी दुनिया अथवा ब्रह्मा की रात है।

(●) परमात्मा शिव अपने वायदेनुसार 5000 वर्ष बाद पुनः कलियुग अंत में सृष्टि को परिवर्तित करने, तथा सभी आत्माओं को पतित से पावन बनाने, पाँच विकारों रूपी रावण के चंगुल से छुड़ाने, मुक्ति-जीवनमुक्ति रूपी शांति-सुख का वसा देने, वापस वास्तविक घर (Original Home) ले जाने आये हैं। आप भी अपने पारलौकिक पिता को पहचान इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में पाँच विकारों की आहुती दे तथा अपनी आत्मा तथा सृष्टि को पवित्र (Pure) बनायें जो केवल परमात्मा शिव (Supreme Soul) की याद (Remembrance) से ही संभव है। और किसी माध्यम या साधन से नहीं। याद से ही जन्म-जन्मांतर के विकर्म (पापों) का बोझ भस्म समाप्त होते हैं तथा सेकण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति के अधिकारी बन सकते हैं।

(●) आप अधिक जानकारी के लिए किसी भी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेंटर पर पधारकर यह निःशुल्क ज्ञान प्राप्त करें तथा अपनी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करें ताकि भविष्य में सतयुगी दैवी स्वराज्य का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करो। जहाँ स्वयं परमपिता शिव बाप के रूप में 21 जन्म स्वर्ग की वर्सा (Inheritance) देते हैं, टीचर बनकर दैवी गुण (Deity Qualities) धारण कराते हैं व सद्गुरु - Liberator बनकर मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। यह ज्ञान परमात्मा शिव केवल एकबार संगमयुग पर अपने आत्मारूपी बच्चों को देते हैं ताकि वे इस कलियुगी-नर्क से निकल सतयुगी स्वर्ग में आ सके जहाँ 100% Health, Wealth, Happiness है।

अभी नहीं तो कभी नहीं

NOW OR NEVER